भैरवी चक्र

शास्त्रों में और तांत्रिक ग्रन्थों में ऊर्वशी अप्सरा को वश में करने, उसे प्रिया रूप मे देखने और उसके माध्यम से धन, सम्पत्ति, सुख सौभाग्य प्राप्त करने के लिए साबर मन्त्रों में भी कुछ विधियां दी गयी है, जिसके माध्यम से इस प्रकार के कार्य सम्पन्न हो सकते हैं ।

मन्त्रों के माध्यम से अथवा साधनाओं के माध्यम से धन प्राप्त करना अथवा जीवन की समस्याओं को मिटाना और जीवन में निरन्तर उन्नति करना गलत नहीं है, साधु सन्यासी भी इसका उपयोग करते रहे हैं, और फिर साबर मन्त्र तो स्वयं भगवान शिव के अक्षर रूप हैं, और उनके द्वारा स्पष्ट किये हुए इन मन्त्रों के माध्यम से ही मनोवांछित कार्य सम्पन्न होते हैं ।

ऊर्वशी अपने आप में अत्यन्त सौन्दर्य युक्त अप्सरा है, जो कि एक तरफ रूप और यौवन से परिपूर्ण है, तो दूसरी ओर धन और सुख सौभाग्य देने में भी सफल है, इसीलिए ऊर्वशी साधना को जीवन का सौभाग्य माना गया है ।

इस प्रकार की साधना को तांत्रिक ग्रन्थों में "भैरवी चक्र साधना" कहा है, भैरवी का तात्पर्य -- एक ऐसी देवी जो मन्त्रों के द्वारा साधक के लिए सिद्ध हो कर उसका मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती है, और इसीलिए उर्वशी जैसी अद्वितीय अप्सरा को सिद्ध करने और प्रिया रूप में उसे अपने अनुकूल बनाने तथा धनदायक लक्ष्मी के रूप में अपने अनुकूल बनाने में सिद्ध ऐसे प्रयोग को भी "भैरवी चक्र प्रयोग" कहा गया है ।

यह प्रयोग मुझे एक सन्यासी से प्राप्त हुआ था, और उन्होंने उर्वशी को साबर मन्त्रों के द्वारा पूर्णतः सिद्ध कर रखा था, आश्चर्य की बात यह कि सन्यासी जी के आश्रम में न तो धन की किसी प्रकार से कमी थी और न सुख सौभाग्य की, सात्विक जीवन व्यतीत करते हुए भी उन्होंने इस अद्वितीय साधना को सिद्ध कर अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर ली थी ।

पत्रिका पाठकों को मैं ऐसी ही दुर्लभ और अद्वितीय साधना इन पंक्तियों के माध्यम से दे रहा हूं, आप स्वयं एक बार इस प्रयोग को कर के तो देखिए वास्तव में ही आप एहसास करेंगे कि यह साधना शीघ्र सिद्धिदायक, पूर्ण प्रभावयुक्त और अचूक फल देने वाली है ।

यह मात्र दो दिन की साधना है, किसी भी शुक्रवार की रात्रि से यह प्रयोग प्रारम्भ होता है, और शनिवार की रात्रि को समाप्त हो जाता है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है ।

साधना काल में पुरुष अच्छे और सुन्दर वस्त्र धारण कर के बैठे, साधक चाहे तो धोती कुर्ता या पैंट शर्ट आदि किसी भी प्रकार के उत्तम सुसज्जित वस्त्र धारण कर के उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सामने बैठ जाय ।

फिर सामने एक थाली में 'उर्वश्यै नमः' अक्षर लिखें, और उसके आगे गुलाब या अन्य पुष्पों को बिछा कर उस पर भैरवी चक्र को स्थापित कर दें, इसे तांत्रिक ग्रन्थों में उर्वशी यन्त्र, अप्सरा यन्त्र या भैरवी यन्त्र भी कहा है, यह यन्त्र महत्वपूर्ण और जीवन भर उपयोगी रहता है ।

फिर इस यन्त्र की संक्षिप्त पूजा करें, और प्रार्थना करे, कि मैं अमुक जाति अमुक नाम का, पुरुष पूर्ण प्रेम एवं आत्मीयता के साथ साबर मन्त्र के द्वारा उर्वशी सिद्ध करने जा रहा हूं, जिससे कि उर्वशी प्रिया रूप में मेरे आधीन रहे, और जीवन भर, जैसी और जो भी मैं आज्ञा दूं, उसे पूरा करें ।

इसके बाद इस यन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे और पहले से ही मंगाया हुआ पान या जिसे संस्कृत में ताम्बूल कहते है, वह मुंह में रख कर चबा लें, पान में कत्था, चूना, सुपारी, इलायची आदि डाल कर यह पान बाजार में कहीं पर भी पान वाले की दुकान पर मिल जाता है ।

इसके बाद स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का २१ बार उच्चारण करें, इसमें पूरी माला मन्त्र जप का विधान नहीं है ।

साबर उर्वशी मन्त्र

ॐ नमो आदेश । गुरू को आदेश । गुरूजी के मुंह में ब्रह्मा उनके मध्य में विष्णु और नीचे भगवान महेश्वर स्थापित है, उनके सारे शरीर में सर्व देव निवास करते हैं, उनको नमस्कार । इन्द्र की अप्सरा गन्धर्व कन्या उर्वशी को नमस्कार । गगन मण्डल में घुंघुरुओं की झंकार और पाताल में संगीत की लहर ।

लहर में ऊर्वशी के चरण । चरण में थिरकन । थिरकन में सर्प । सर्प में काम वासना । काम वासना में कामदेव । कामदेव में भगवान शिव । भगवान शिव ने जमीन पर उर्वशी को उतारा । श्मशान में धूनी जमाई । उर्वशी ने नृत्य किया । सात दीप नवखण्ड में फूल खिले, डाली झूमी । पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण आकाश पाताल में सब मस्त भये ।

मस्ती में एक ताल दो ताल तीन ताल । मन में हिलोर उठी, हिलोर में उमंग, उमंग में ओज, ओज में सुन्दरता, सुन्दरता में चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखी में शीतलता शीतलता में सुगन्ध, और सुगन्ध में मस्ती । यह मस्ती ऊर्वशी की मेरे मन भाई ।

यह मस्ती मेरे सारे शरीर में अंग अंग में लहराई, उर्वशी इन्द्र की सभा छोड़ मेरे पास आवे । मेरी प्रिया बने, हरदम मेरे साथ रहे, मेरो कहियो करे, जो कहूं सो पूरो करे, सोचूं तो हाजर रहे, यदि ऐसो न करे तो दस अवतार की दुहाई, ग्यारह रूद्र की सौगन्ध, बारह सूर्य को वज्र, तेतीस कोटी देवी देवताओं की आण ।

मेरो मन चढ़े, अप्सरा को मेरो जीवन उसके शृंगार को । मेरी आत्मा, उसके रूप को । और मैं उसको, वह मेरे साथ रहे । धन, यौवन सम्पत्ति, सुख दे । कहियो करे, हुकुम माने । रूप जोवन भार से लदी मेरे सामने रहे । जो ऐसो न करे, तो भगवान शिव को त्रिशूल और इन्द्र को वज्र उस पर पड़े ।

~~देवांगना सिद्धि~~

यह मंत्र अपने आप में ही पूर्ण सिद्धिदायक मंत्र है। सावर मंत्र सीधे सरल और स्पष्ट होते है, इसीलिए उसके उच्चारण में किसी प्रकार का दोष व्याप्त नहीं होता, जिस सन्यासी ने मुझे यह मंत्र और प्रयोग विधि समझाई थी उन्होंने बताया था कि रात्रि को इस मंत्र को २१ बार उच्चारण करना पर्याप्त है पर यदि साधक चाहे तो १०८ बार उच्चारण कर सकता है, पर इससे ज्यादा इस मंत्र का उच्चारण करने की जरूरत नहीं है।

दूसरे दिन शनिवार को भी इसी प्रकार से मंत्र जप करे, और मंत्र जप के बाद वह उस भैरवी यंत्र को धागे में या चैन में पिरो कर अपने गले में धारण कर ले। उस समय, जब उर्वशी साधक के पास प्रत्यक्ष प्रकट हो तब साधक को चाहिए कि पहले से ही मंगाये हुए फूलों के हार को उसके गले में पहना दें, खाने के लिए पान दें, और हाथ में हाथ लेकर वचन ले ले, कि जैसा साधक कहेगा, उर्वशी जीवन भर उसी प्रकार से कार्य करती रहेगी।

इसके बाद जब भी साधक इस मंत्र का एक बार उच्चारण करेगा तो उर्वशी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सामने स्पष्ट होगी और साधक का कहा हुआ कार्य सम्पन्न करेगी।

- उर्वशी साधना -

उर्वशी साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है। इस साधना मे जलपात्र, केसर, पुष्प आधा मीटर चौकोर पीला वस्त्र **सोनवल्ली**, मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त **उर्वशी मंत्र** की आवश्यकता होती है।

शुक्रवार को रात्रि को साधक स्नान कर पीले आसन पर उत्तर दिशा में मुंह कर बैठ जाये तथा सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर **उर्वशी मंत्र** स्थापित करें तथा सामने गुलाब के पांच पुष्प रखें तत्पश्चात् घी के पांच दीपक प्रज्वलित करें तथा अगरबत्ती जलायें। फिर उसके सामने **सोनवल्ली** रख दें और उस पर केशर से तीन बिन्दियां लगा दें तथा मध्य में निम्न शब्द अंकित करें—

"ॐ उर्वशी प्रियवशं करि हुं"

इस मन्त्र के नीचे केशर से अपना नाम

॥ॐ ह्रीं उर्वशी मम प्रिय मम चिन्तानुरंजन करि करि फट्॥

लिखें। तत्पश्चात् साधक पीली धोती धारण कर पीले आसन पर उत्तर दिशा में मुंह कर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की एक सौ एक (१०१) माला मंत्र जप करें—

उर्वशी मंत्र

॥ॐ ह्रीं उर्वशी मम प्रिय मम चिन्तानुरंजन करि करि फट्॥

यह मंत्र सात दिन की साधना है और **सातवें दिन अत्यधिक सुन्दर वस्त्र धारण किये हुये यौवन भार से दबी हुई उर्वशी प्रत्यक्ष उपस्थित होकर साधक के पास बैठ जाती है और कहती है "तुमने मुझे साधना के द्वारा अपने वश मे किया है। मैं आजीवन आप जो भी आज्ञा देंगे उसका पालन करूंगी।"**

तब पहले से ही लाये हुये गुलाब के पुष्पों का हार **उर्वशी** के गले मे पहना दें। इस प्रकार यह साधना सिद्ध हो जाती है और जब कभी भी उपरोक्त उर्वशी मंत्र का तीन बार उच्चारण किया जाता है तो उर्वशी प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा साधक जैसी भी आज्ञा देता है वह पूरा करती है।

साधना समाप्त होने पर उर्वशी मंत्र धागे मे पिरोकर अपने गले मे धारण कर लें। सोनवल्ली को पीले वस्त्र मे लपेट कर घर मे गुप्त स्थान पर रख दें। इससे उर्वशी जीवन भर वश मे बनी रहती है।

अजयकुमार उत्तम
फाल्गुन कृष्ण १३, २०५२
महाशिवरात्रि
७-२-९६ शुक्रवार

साबर मांत्रोक्त अप्सरा सिद्धि शीघ्र सरल सम्पूर्ण

भारतीय साधना की कोई भी पद्धति लें उसमें अप्सरा साधना का वर्णन मिलता ही है, जिससे सिद्ध होता है कि अप्सरा साधना जहां अत्यन्त प्राचीन है वहीं प्रामाणिक भी।

साबर साधना द्वारा अप्सरा सिद्ध करने में विशेष बात यह है कि शीघ्र सिद्धि के साथ-साथ साधक को अप्सरा का जीवन - पर्यन्त साथ भी मिलता है।
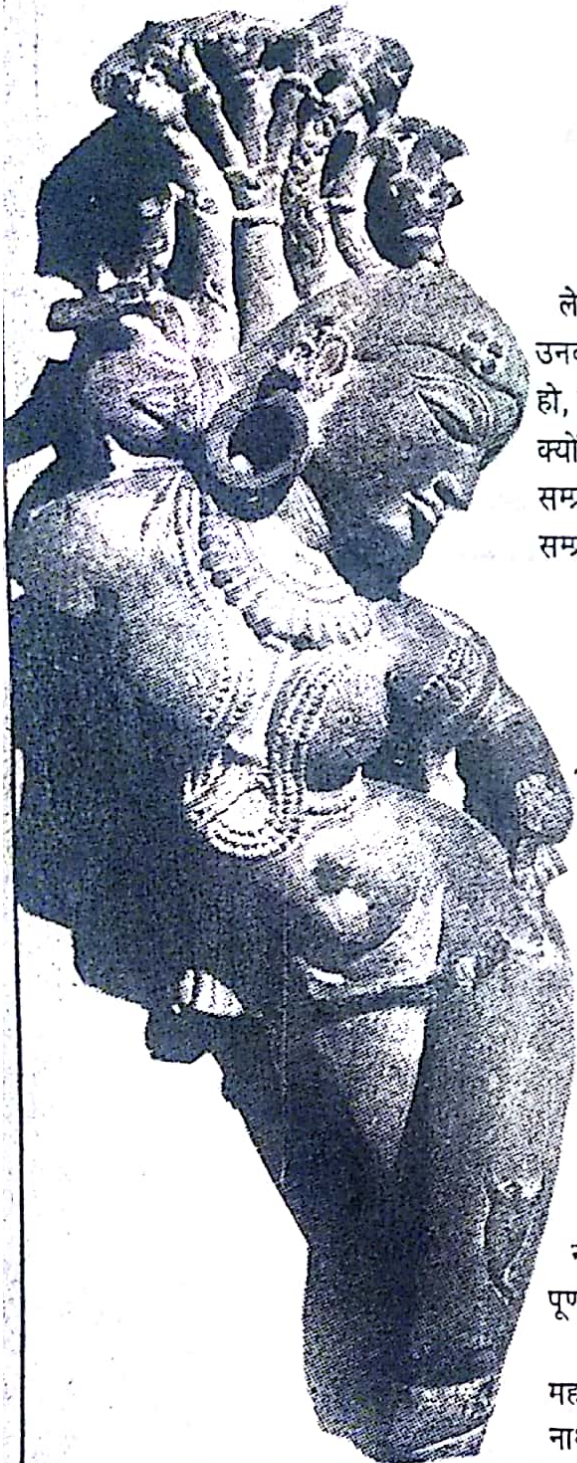
साबर मंत्र और अप्सरा साधना यह कुछ लोगों को अटपटा लग सकता है क्योंकि साबर मंत्रों के रचयिता तो पूर्ण हठयोगी हैं, लेकिन जो साबर मंत्रों के इतिहास एवं उनके रचयिताओं के इतिहास से परिचित हो, उनके लिए हमें कोई भी आश्चर्य नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि किस प्रकार नाथ सम्प्रदाय अत्यन्त पूर्व में एक वाम मार्गीय सम्प्रदाय ही था।

उड़ीसा के श्री शैल पर्वत से सम्बन्धित चौरासी सिद्धों की कथा से सभी परिचित हैं, जिन्होंने भोग को ही मुक्ति का उपाय बताया और खुल कर पंचमकारों का सेवन किया। ऐसा ही चौरासी सिद्धों में एक प्रमुख सिद्ध सरहपाद की शिष्य परम्परा में आगे चलकर योगी जालन्धर नाथ हुए, जिन्होंने अपना पूर्ण स्वतन्त्र नाथ सम्प्रदाय स्थापित किया, जिसमें आगे चलकर मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ हुए। गोरखनाथ ने ही नाथ सम्प्रदाय में से वामाचार हटाकर पूर्णरूप से इसे हठयोग का रूप दिया।

भोग को जीवन में अत्यधिक महत्व देने के कारण यह स्वाभाविक था कि नाथ सम्प्रदाय के पूर्ववर्ती सभी योगी अप्सरा साधनाओं, यक्षिणी साधनाओं एवं किसी भी प्रकार की इतर साधनाओं को प्रमुखता देते थे। केवल उनके काल तक ही नहीं बाद में भी गुरु गोरखनाथ की परम्परा में आगे चलकर अनेक सिद्धों ने तंत्र और भोग का सम्मिश्रण कर नए-नए साधना सूत्र ढूंढे और उनके ये सूत्र किसी भी पद्धति से अधिक तीव्र व प्रामाणिक रहे, उदाहरण स्वरूप गोरखनाथ के ही शिष्य

करवाल भैरव हुए जिन्होंने भैरवी चक्र सम्प्रदाय को प्रारम्भ किया और अपने ग्रंथ 'आनन्द मंगल' में स्त्री के माध्यम से स्वर्ण बनाने की कुछ क्रियाओं को स्पष्ट किया, जिसमें से भैरवी साधना, भैरवी पूजन और भोग भैरवी क्रियाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ऐसे समस्त सिद्धों ने अपने ग्रंथों में उन लक्षणों का वर्णन किया, जिनसे युक्त स्त्री के माध्यम से ऐसी क्रियाएं सम्पन्न हो सकती हैं अथवा उनके अभाव की दशा में उन्होंने कतिपय अप्सरा साधनाओं को प्रमुखता दी। उनकी यह परम्परा और प्रयोग की लालसा केवल विषय विशेष तक अथवा स्त्री के माध्यम से स्वर्ण निर्माण तक ही सीमित नहीं रही, वरन् और भी आगे बढ़कर उन्होंने उन अप्सराओं की साधना पद्धतियां खोजीं जिनकी साधना पद्धति अन्य रूप में प्रचलित थी। यह एक प्रकार से उनका हठ था और उनकी परम्परागत तंत्र पद्धति को चुनौती थी। इसके माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि वे उन अप्सराओं को प्रकट कर सकते हैं जो अपने-आप में सौन्दर्य की साकार मूर्ति बताई गई हैं।

प्रमुख अप्सराओं के नाम के मध्य तिलोत्तमा का नाम उफनते यौवन की साकार मूर्ति के रूप में वर्णित किया गया है। उर्वशी, रम्भा, मेनका, घृताची सदृश्य उच्चकोटि की अप्सराओं के मध्य तिलोत्तमा का भी स्थान विशेष और अनिन्द्य सौन्दर्य का प्रतिमान है ही। सुतवां अण्डाकार चेहरा, सामान्य से कुछ बड़ी लेकिन बोलती आंखें, हल्का सा सुनहरापन लिए खिलता हुआ गोरा रंग, रसीले अधर और गढ़ी हुई चिबुक ... इन्हीं का सम्मिलित नाम है तिलोत्तमा।

सामान्य से कुछ लम्बी देह यष्टि, और सांचे में ढला हुआ सारा बदन, जिस पर यौवन की लालिमा हल्की सी उत्तेजना के कारण जगमगा रही हो, और सारा जिस्म एक अनोखी सी मादकता में भीगा हो।

सुडौल वक्ष-स्थल, जिसकी गठन से किसी भी साधक के दिल में सनसनी भर जाए और जिन पर कौंधती हुई सुनहरी लड़ियों से किसी का भी ध्यान उन उन्नत बिन्दुओं की ओर जाने को बाध्य हो ही जाए। सीधे, सपाट रोम रहित नाभि प्रदेश, जिसकी प्रत्येक पग में थिरकन हो, यौवन के गीत गा रही हो, ऐसी ही सौन्दर्यवती तिलोत्तमा निस्सन्देह अपने संग की अप्सराओं के मध्य एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करने की स्वामिनी है ही।

कौंधती हुई सुनहरी लड़ी जो उन पर दृष्टि टिकाने को विवश ही कर दे और दृष्टि जहां से फिसलकर चली जाए उस रोम रहित नाभि प्रदेश पर . . .

. . . उन्नत नितम्ब प्रदेश, और कदली वृक्ष के नव पल्लवों की ही भांति शरद की सुनहरी धूप में कोमल आभा देती सुडौल और रोम रहित भारी जंघाएं, जिनकी कोई उपमा उनकी मासंलता में न समा रही हो। सम्पूर्ण देह यौवन की नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करता हुआ जिसका उद्दाम नर्तन देखना तो सचमुच सौभाग्यशाली साधकों के जीवन की ही घटना हो सकती है। और इसी सौभाग्य के साक्षी रहे नाथ योगी, उन्होंने अपने मंत्र बल, साधनात्मक बल और पौरुष के दम पर न केवल इन विशिष्ट अप्सराओं को प्रकट होने को बाध्य किया वरन् उनके यौवन का उपभोग कर यह स्पष्ट किया कि यदि साधक चाहे तो वह भी अपने जीवन में इन्द्र से कम वैभव नहीं एकत्र कर सकता है।

सच तो यह है कि अप्सरा साधनाओं की आवश्यकता गृहस्थ के जीवन में ही सर्वाधिक है क्योंकि जीवन में भोगयुक्त रहना गृहस्थ के द्वारा ही तो सम्भव होता है।

ऐसी ही अनके साधनाओं में से एक विशिष्ट साधना, जो तिलोत्तमा के प्रत्यक्षीकरण से सम्बन्धित है उसका विवरण मैं आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत कर रहा हूं, जिसके माध्यम से मेरे कथन की प्रामाणिकता स्पष्ट हो सकती है। यद्यपि प्रारम्भ का कार्य, जब इन साधनाओं की रचना की गई वह भिन्न था और साधक समाज से कट कर अपने विशिष्ट ढंग से इनकी सिद्धि करते थे। जबकि आज ऐसा नहीं रह गया है और न ऐसा आवश्यक ही है कि इन साधनाओं को समाज से अलग हटकर, एकान्त में बैठकर सिद्ध किया जाए। सच तो यह है कि अप्सरा साधनाओं की आवश्यकता गृहस्थ के जीवन में ही है, क्योंकि जीवन में भोगयुक्त रहना तथा जीवन के सभी सुखों का आस्वादन करना केवल गृहस्थ के द्वारा ही सम्भव होता है, सौन्दर्य की यथार्थ परिभाषा और सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण उसके लिए ही आवश्यक होता है। काल के परिवर्तन के साथ नाथ योगियों के परम्परागत उपायों के स्थान पर यंत्रों के विधान रचे गए, **किन्तु नाथ योगियों की यह विशेषता थी कि वे प्रकृति के सम्पर्क में रहने के कारण कुछ ऐसी जड़ी अथवा फल अपने पास रखते थे जिसके माध्यम से वे साधनाओं में सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त कर लेते थे।**

प्रस्तुत साधना में भी ऐसा है, परम्परागत अप्सरा यंत्र के साथ-साथ चन्द्रप्रिया नामक जड़ी एक आवश्यक सामग्री होती है, जिसको साधना स्थल पर

(शेष भाग [illegible] पर) १२२

पृष्ठ १०५ का शेषांश — तिलोत्तमा अप्सरा (साबर विधान)

रखना साधना मे सिद्धि का एक नियत उपाय माना गया है। शुक्रवार की रात्रि में घी अथवा तेल का दीपक प्रज्ज्वलित कर साधक अपने समक्ष **तिलोत्तमा अप्सरा यंत्र** स्थापित कर **चन्द्रप्रिया जड़ी** पर त्राटक करते हुये **अप्सरा माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें -

॥मंत्र॥

॥आवे आवे चिन्ते चिन्तावे अपसरा प्रत्यक्ष हुये मेरो कह्यो कारज करे, हुकम बजावे, न करे तो राजा अनंग पाल की दुहाई। सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॐ हुं फट्॥

मंत्र जप के उपरान्त चन्द्रप्रिया जड़ी को पीले कपड़े के साथ अपनी दाहिनी भुजा पर इस प्रकार बांधे जिससे कि वह शरीर से निरन्तर स्पर्श करती रहे और बिना आसन अथवा दीपक आदि के औपचारिकता निभाये नित्य रात्रि को अथवा जब भी समय मिले उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप कर लेना पर्याप्त है। इस प्रकार साधक को शनैः शनैः पहले तो बिम्ब रुप मे और बाद मे पूर्ण नारी शरीर के रुप मे अप्सरा का प्रत्यक्षीकरण सम्भव होता है जो जीवन पर्यन्त उसके सुखद साहचर्य की प्रतीक होती है। साधक जिस प्रकार अपनी प्रेमिका के साथ वार्तालाप, हास्य, आलिंगन, चुम्बन आदि करता है उसी प्रकार अप्सरा से भी कर सकता है। इस साधना मे प्रयुक्त तिलोत्तमा अप्सरा यंत्र व अप्सरा माला को सम्भाल कर रख लें तथा समय-समय पर पूर्ण विधि विधान से साधना को पुनः सम्पन्न कर लें। इससे जो न्यूनतायें आ जाती है अथवा वातावरण आदि के दोष के कारण प्रत्यक्षीकरण मे जो बाधा आने लगती है उसका निराकरण सम्भव होता है।

साबर मंत्रो द्वारा अप्सरा साधना की यह विधि पूर्णतः परिक्षित है।

तिलोत्तमा अप्सरा यन्त्र २५०/- चन्द्रप्रिया जड़ी ३००/- अप्सरा माला १२०/-